NCERT की नई पाठ्यपुस्तक दीपकम् पर आधारित

संजीव® रिफ्रेशर

संस्कृत

दीपकम्

कक्षा-6 के विद्यार्थियों के लिए

लेखक : डॉ. जितेन्द्र अग्रवाल

मुख्य विशेषताएँ

1. पाठ-परिचय
2. मूल पाठ, अन्वय, कठिन शब्दार्थ एवं हिन्दी अनुवाद
3. पठित अवबोधनम्
4. पाठ्यपुस्तक के सभी प्रश्नोत्तर
5. पाठ्यक्रमानुसार अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर
6. व्याकरण
7. रचनात्मक कार्य
   - चित्राधारित-वर्णनम्
   - अनुच्छेद/लघुकथा-लेखनम्
   - पत्र-लेखनम्
   - संवाद-लेखनम्
   - अपठित अवबोधनम्

₹ मूल्य : 250.00

प्रकाशक :

संजीव प्रकाशन, जयपुर

प्रकाशक :

संजीव प्रकाशन

धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर-3

email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com

website : www.sanjivprakashan.com

© प्रकाशकाधीन

लेजर कम्पोजिंग :

संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर

★★★★★★

वैधानिक चेतावनी

- इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं—
  email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com
  पता : प्रकाशन विभाग संजीव प्रकाशन
  धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर
  आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।
- इस पुस्तक में प्रकाशित किसी त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।
- प्रकाशक की अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भाग को किसी भी रूप में फोटोस्टेट, माइक्रोफिल्म, या किसी अन्य माध्यम से, या किसी सूचना पुनर्प्राप्ति प्रणाली, इलैक्ट्रॉनिक मीडिया या यांत्रिक में शामिल करना कॉपीराइट का उल्लंघन माना जायेगा।
- सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

विषय-सूची

प्रथमः खण्डः—दीपकम्

1.	वयं वर्णमालां पठामः	1
2.	एषः कः? एषा का? एतत् किम्?	18
3.	अहं च त्वं च	30
4.	अहं प्रातः उत्तिष्ठामि	40
5.	शूराः वयं धीराः वयम्	48
6.	सः एव महान् चित्रकारः	63
7.	अतिथिदेवो भव	73
8.	बुद्धिः सर्वार्थसाधिका	86
9.	यो जानाति सः पण्डितः	99
10.	त्वम् आपणं गच्छ	112
11.	पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि	124
12.	आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः	141
13.	सङ्ख्यागणना ननु सरला	154
14.	माधवस्य प्रियम् अङ्गम्	168
15.	वृक्षाः सत्पुरुषाः इव	180

द्वितीयः खण्डः—व्याकरण भागः

1.	वर्ण–परिचयः	193
2.	लिङ्ग–ज्ञानम्	201
3.	वचन–ज्ञानम्	204
4.	पुरुष–ज्ञानम्	208
5.	विशेषण–विशेष्य–ज्ञानम्	210
6.	कारक–विभक्ति–परिचयः	214
7.	शब्दरूपाणि	221
8.	धातुरूपाणि	236
9.	संख्याज्ञानम्	247
10.	अव्यय–ज्ञानम्	257

11.	अशुद्धि-संशोधनम्	263
12.	सन्धि-ज्ञानम्	272
13.	उपसर्गाः	280
14.	प्रत्यय-ज्ञानम्	286
15.	अनुवादकार्यम्	293

तृतीयः खण्डः—रचना भागः

1.	चित्राधारित-वर्णनम्	303
2.	अनुच्छेद/लघुकथा-लेखनम्	311
3.	पत्र-लेखनम्	314
4.	संवाद-लेखनम्	320
5.	अपठित-अवबोधनम्	323
●	**परिशिष्टम्**	329

प्रथमः खण्डः—दीपकम् (प्रथमः भागः)

प्रथमः पाठः
1

वयं वर्णमालां पठामः
(हम वर्णमाला पढ़ते हैं)

पाठ-परिचय—प्रस्तुत पाठ में संस्कृत वर्णमाला का परिचय उदाहरण सहित विस्तारपूर्वक दिया गया है। स्वरों एवं व्यञ्जनों के भेदों को एवं उनसे निर्मित वर्णों एवं शब्दों को सरलता से समझाया गया है। साथ ही वर्ण-संयोग द्वारा शब्द-निर्माण एवं शब्दों का विच्छेद करने हेतु पर्याप्त अभ्यास-कार्य दिया गया है।

मूलपाठस्य अवबोधनम्—

(मूल पाठ, शब्दार्थ, सरलार्थ और अभ्यास-कार्य)

(1)

वर्णाः द्विविधाः भवन्ति—स्वराः व्यञ्जनानि च।

1. स्वराः

स्वराणाम् उच्चारणं स्वतन्त्ररूपेण भवति।

स्वराः द्विविधाः सन्ति-समानाक्षराणि सन्ध्यक्षराणि च।

1. समानाक्षराणि—वर्णमालायाम् आदौ ये सामान्याः स्वराः सन्ति, ते समानाक्षर-स्वराः भवन्ति—

ह्रस्वः	दीर्घः
अ	आ
इ	ई
उ	ऊ
ऋ	ॠ
ऌ	'ऌ'-वर्णस्य दीर्घाः न सन्ति

2. सन्ध्यक्षराणि—द्वयोः निश्चित-स्वरयोः सन्धिद्वारा ये नवीनाः स्वर-वर्णाः जायन्ते, ते सन्ध्यक्षर-स्वराः भवन्ति—ए, ऐ, ओ, औ। (सन्ध्यक्षराणां ह्रस्वाः न सन्ति।)

अ + इ → ए　　　अ + ए → ऐ

अ + उ → ओ　　　अ + ओ → औ

अनुनासिक-स्वराः—मुखेन सह नासिकया अपि उच्चारिताः स्वराः अनुनासिक-स्वराः भवन्ति—

अँ	**आँ**	**इँ**	**ईँ**	**उँ**	**ऊँ**	**ऋँ**	**ॠँ**	**ऌँ**
एँ	**ऐँ**	**ओँ**	**औँ**					

कठिन-शब्दार्थ—**द्विविधाः** = दो प्रकार के। **भवन्ति** = होते हैं। **सन्ध्यक्षराणि** = दो स्वरों से सन्धि द्वारा निर्मित नए वर्ण। **मुखेन सह** = मुख के साथ। **नासिकया** = नाक द्वारा। **अपि** = भी। **उच्चारिताः** = बोले गए। **आदौ** = पहले।

सरलार्थ—वर्ण दो प्रकार के होते हैं- स्वर और व्यञ्जन।

(1) स्वर

स्वरों का उच्चारण स्वतन्त्र रूप से होता है। स्वर दो प्रकार के होते हैं— समानाक्षर और सन्ध्यक्षर।

1. **समानाक्षर**-वर्णमाला में सबसे पहले जो सामान्य स्वर हैं, वे समान अक्षर वाले स्वर होते हैं।

ह्रस्व-स्वर- अ, इ, उ, ऋ, ऌ।

दीर्घ-स्वर- आ, ई, ऊ, ॠ ('ऌ' वर्ण का दीर्घ नहीं होता है)।

2. **सन्ध्यक्षर-ह्रस्व-स्वर**-सन्ध्यक्षरों के ह्रस्व नहीं होते हैं।

दीर्घ स्वर- ए, ऐ, ओ, औ।

दो निश्चित स्वरों की संधि द्वारा जो नवीन स्वर-वर्ण बनते हैं, वे सन्ध्यक्षर स्वर होते हैं—

अ + इ → **ए**　　अ + ए → **ऐ**

अ + उ → **ओ**　　अ + ओ → **औ**

अनुनासिक-स्वर—

मुख के साथ नासिका के द्वारा भी उच्चारण किये जाने वाले स्वर 'अनुनासिक-स्वर' होते हैं।

अँ	आँ	इँ	ईँ	उँ	ऊँ	ऋँ	ॠँ	ऌँ
एँ	ऐँ	ओँ	औँ					

(2) व्यञ्जनानि

व्यञ्जनानाम् उच्चारणे कस्यचित् **स्वरस्य** सहायतायाः अपेक्षा अवश्यं भवति। अतः **वर्णमालायां व्यञ्जनानाम्** उच्चारणार्थं सर्वत्र **अ** **स्वरस्य** योजनं भवति। **उदाहरणम्**—

क् + अ = क　　ख् + अ = ख

ग् + अ = ग　　घ् + अ = घ

अत्र **व्यञ्जनं** केवलं → क् ख् ग् घ् इत्येव अस्ति।

अत्र **अ** **स्वरः** केवलम् उच्चारणार्थं योजितः अस्ति।

व्यञ्जनानां चत्वारः भेदाः सन्ति–

1. स्पर्शाः (वर्ग्याः) वर्णाः–

क-वर्गः–	क	ख	ग	घ	ङ
च-वर्गः–	च	छ	ज	झ	ञ
ट-वर्गः–	ट	ठ	ड	ढ	ण
त-वर्गः–	त	थ	द	ध	न
प-वर्गः–	प	फ	ब	भ	म

स्पर्शाः (वर्ग्याः) व्यञ्जनवर्णाः स्वकीय-उच्चारण-स्थानानुसारेण पञ्चसु वर्गेषु विभक्ताः भवन्ति।

कठिन शब्दार्थ–व्यञ्जनानाम् = व्यञ्जनों के। **उच्चारणे** = बोलने में। **कस्यचित्** = कोई, किसी। **सहायतायाः** = सहायता की। **अतः** = इसलिए। **सर्वत्र** = सभी जगह। **योजनम्** = जोड़ना। **इत्येव (इति + एव)** = ऐसा ही। **योजितः** = जोड़ा गया है। **चत्वारः** = चार (4)। **वर्ग्याः** = वर्गीय। **स्वकीय** = अपने। **पञ्चसु** = पाँच में।

सरलार्थ–व्यञ्जनों के उच्चारण में किसी स्वर की सहायता अवश्य होती है। इसलिए वर्णमाला में व्यञ्जनों के उच्चारण के लिए सभी जगह 'अ' स्वर जोड़ा जाता है। उदाहरणार्थ–

क् + अ = क   ख् + अ = ख

ग् + अ = ग   घ् + अ = घ

यहाँ व्यञ्जन केवल → क् ख् ग् घ् यही हैं।

यहाँ अ स्वर केवल उच्चारण के लिए जोड़ा गया है।

व्यञ्जनों के चार भेद हैं—

1. स्पर्श (वर्गीय) वर्ण–

क-वर्गः–	क	ख	ग	घ	ङ
च-वर्गः–	च	छ	ज	झ	ञ
ट-वर्गः–	ट	ठ	ड	ढ	ण
त-वर्गः–	त	थ	द	ध	न
प-वर्गः–	प	फ	ब	भ	म

वर्गों के (स्पर्श) व्यञ्जन-वर्ण अपने उच्चारण-स्थान के अनुसार पाँच वर्गों में विभाजित होते हैं।

2. अन्तःस्थाः वर्णाः– य र ल व

अन्तःस्थाः वर्णाः बहुत्र **स्वर-वर्णानां** स्थाने जायन्ते। अतः एते–"**अर्ध-स्वराः**" इत्यपि उच्यन्ते।

इ	+	अ	→	य्	+	अ	यथा–	यदि	+ अपि	=	**यद्यपि**
ऋ	+	अ	→	र्	+	अ		पितृ	+ आज्ञा	=	**पित्राज्ञा**
लृ	+	अ	→	ल्	+	अ		लृ	+ आकृतिः	=	**लाकृतिः**
उ	+	अ	→	व्	+	अ		सु	+ आगतम्	=	**स्वागतम्**

3. ऊष्म-वर्णाः– श ष स ह

ऊष्मणां व्यञ्जन-वर्णानाम् उच्चारण-समये मुखात् उष्णः वायुः निस्सरति।

कठिन शब्दार्थ–बहुत्र = बहुत जगह। **स्थाने** = स्थान पर। **जायन्ते** = होते हैं। **एते** = ये सब। **अपि** = भी। **पित्राज्ञा** = पिता का आदेश। **लाकृतिः** = 'लृ' वर्ण का रूप। **ऊष्णः** = गर्म। **निस्सरति** = निकलती है।

सरलार्थ–2. अन्तःस्थाः वर्णाः य र ल व

अन्तःस्थ वर्ण बहुधा स्वरवर्णों के स्थान पर होते हैं। अतः इन्हें– "अर्ध-स्वर" भी कहा जाता है।

इ	+	अ	→	य्	+	अ	यथा–	यदि	+ अपि	=	यद्यपि
ऋ	+	अ	→	र्	+	अ		पितृ	+ आज्ञा	=	पित्राज्ञा
लृ	+	अ	→	ल्	+	अ		लृ	+ आकृतिः	=	लाकृतिः
उ	+	अ	→	व्	+	अ		सु	+ आगतम्	=	स्वागतम्

3. ऊष्म-वर्णाः श ष स ह

ऊष्म व्यञ्जन-वर्णों के उच्चारण-समय मुख से उष्ण वायु निकलती है।

4. अयोगवाहौ वर्णौ– अं अः

अयोगवाहः विशिष्टः व्यञ्जन-वर्णः अस्ति। अत्र उच्चारणार्थं **अ** **स्वरस्य** संयोजनं पूर्वं भवति, न तु पश्चात्। अत्र **द्वौ अयोगवाहौ** स्तः–

अं = अ + ं → **अनुस्वारः**

अः = अ + ः → **विसर्गः**

अत्रापि **अनुस्वारः** केवलं ं, तथा **विसर्गः** केवलं ः इत्येव अस्ति।

एवमेव अत्रापि पूर्वं योजितः **अ** **स्वरः** केवलम् उच्चारणार्थम् अस्ति।

व्यञ्जनैः सह सर्वेषाम् अपि स्वराणां संयोजनं भवति। व्यञ्जनैः सह स्वराणां संयोजनेन गुणिताक्षराणि भवन्ति।

कठिन शब्दार्थ–विशिष्टः = विशेष प्रकार का। **उच्चारणार्थम्** = बोलने के लिए। **पूर्वम्** = पहले। **न** = नहीं। **पश्चात्** = बाद में। **अत्र** = यहाँ। **द्वौ** = दो। **अत्रापि (अत्र + अपि)** = यहाँ भी। **एवमेव (एवम् + एव)** = इसी प्रकार।